

पाठ-7 कर्ण

कृपाचार्य और द्रोणाचार्य से शिक्षा प्राप्त करने के बाद पांडवों ने नगरवासियों के सामने कौशल का प्रदर्शन किया ।

अर्जुन की धनुर्विद्या देखकर राजवंशी आश्चर्यचकित रह गए ।

कर्ण द्वारा अर्जुन से द्वंद्व युद्ध करने की इच्छा व्यक्त की गई ।

कृपाचार्य द्वारा कर्ण का परिचय जानना और परिचय प्राप्त कर लेने के बाद कृपाचार्य द्वारा यह कहकर मना कर देना कि राजा का युद्ध राजा से ही होता है ।

दुर्योधन द्वारा तत्काल ही कर्ण को अंगदेश का राजा बना दिया गया ।

इंद्र ने बूढ़े ब्राह्मण का वेश धारण कर कर्ण से जन्मजात कवच कुंडल को भिक्षा में माँगा ।

इंद्र द्वारा भिक्षा में माँगने पर कर्ण ने कवच कुंडल दान में दे दिए ।

कर्ण की दानवीरता से प्रसन्न होकर इंद्र ने शक्ति नामक शस्त्र दे दिया ।

परशुराम जी से कर्ण ने ब्रह्मास्त्र सीखने की इच्छा से वन में जाकर उनसे प्रार्थना की ।

परशुराम जी ने भी कर्ण को सूत पुत्र जानने के बाद शाप दे दिया कि तुम इस शक्ति को उस समय भूल जाओगे जब तुम्हें इस शक्ति की सबसे अधिक जरूरत होगी ।

परशुरामजी द्वारा दी गई विद्या कुरुक्षेत्र के मैदान में अर्जुन से युद्ध करते समय कर्ण को याद नहीं रही ।

कर्ण को द्रोण के आहत हो जाने पर कौरव सेना का सेनापति बनाया गया ।